Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XI Issue – IV July – August 2022

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

डॉ. विनोद श्रीराम जाधव
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं संशोधन मार्गदर्शक
मत्स्योदरी शिक्षण संस्था संचलित,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय अंबड. जि. जालना महाराष्ट्र 431204.

बहुत से लोगों में परस्पर मेल होना एकता है। एकता में बड़ी शक्ति है। जड़ जगत में,पक्षियों में, मनुष्यों में सर्वत्र यह दिखाई देता है, कि जिन में एकता होती है वे थोड़े साधनों से भी बड़े-बड़े काम कर सकते हैं और जिनमें एकता नहीं होती वे पृथक पृथक बलवान होते हुए भी सदा हारते हैं और दुख भोंगते रहते हैं। यहां एक और बात ध्यान देने की है वह है एकजुट होने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। मूक प्राणियों की अपनी भाषा होती है और मनुष्य की अपनी भाषा।

Golbal Oline Electronic International Reserch Journal's licensed Based on a work at http://www.goeiirj.com

भारत बहुभाषी देश है। प्रत्येक राज्य में अलग-अलग भाषा बोली जाती है। अलग-अलग धर्म है,जाती हैं, फिर भी भारत की अनेकता में एकता के लिए पूरे विश्व में एक अलग पहचान हैं।

विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है अर्थात साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रत्येक राज्य मे स्वतंत्रता संग्राम के उद्देश, सिद्धांत, आंदोलन आदि की जानकारी देने के लिए, लोगों को एकत्रित करने के लिए एक भाषा की आवश्यकता थी तब गांधी जी को लगा कि मात्र हिंदी भाषा ही है जो पूरे विश्व में स्वतंत्रता आंदोलन का संदेश पहुंचा सकती है और उन्हें एकजुट कर सकती है इसलिए उन्होंने कई राज्यों में हिंदी संस्थाओं का प्रारंभ किया जिसके माध्यम से हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन की खबरों को भी लोगों तक पहुंचाया गया।

स्वतंत्रता संग्राम में जनता के अंदर देशभक्ति ,राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय चेतना, उत्साह, प्रेरणा, उमंग भरने में हिन्दी भाषा के कवि, लेखकों का विशेष महत्व है। सुमित्रानंदन पंत, भारतेंदु हरिश्चंद्र, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, दिनकर, जयशंकर प्रसाद कई कवियों का, लेखकों का विशेष योगदान रहा है। आप सब ने हिंदी भाषा मे काव्य की रचना कर लोगों को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया उन्हें जागृत किया। दिनकर जी की कविता 'हिमालय 'स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी कुछ बातों को व्यक्त करता है। कविता में भारत की दुर्दशा को चित्रित करते हुए देश की गौरवशाली परंपरा को याद किया गया है और हिमालय को भारत के गौरव का प्रतीक मानकर आव्हान किया गया है। यह आव्हान प्रत्यक्ष रुप से तो हिमालय से है मगर आंतरिक इसका अर्थ है देशवासियों को स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में आव्हान करना

-

रे! रोक युधिष्ठिर को न यहाँ
जाने दे उनको स्वर्ग धीर
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर ।

कह दे शंकर से आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर-बम-बम' का फिर महोच्चार ।

ले अँगडाई हिल उठे धरा,
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलीराट हूँकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद।

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी ! आज तप का न काल,
नवयुग-शंख-ध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल !
(रचनाकाल 1933, 'हुंकार' से 1938)

हिमालय को भारत की विशाल जनता का प्रतिनिधि बनाकर दिनकर जी ने जनता को यह संदेश दिया कि भारत आज पराधीन है पर तुम इस तरह अखंड समाधि लेकर क्यों बैठे हो यह चिर समाधि किस लिए? क्यों तुम्हारा ध्यान नहीं टूट रहा है? भारत भूमि की समस्याओं से भी ज्यादा जटिल किसी समस्या का समाधान तुम महा सुनने में खोज रहे हो क्या? तुम शिवनाथ करो मेरी तुम से अनुरोध है कि आज

युधिष्ठिर को जाने दो और आज हमें अर्जुन और भीम की जरूरत है जो गांडीव और गधा के साथ खाई में गिर गए थे आज उन्हें लौटा दो। आज की कठिनाइयों से जूझने के लिए अर्जुन, भीम की जरूरत है और उस कैलाश वासी शंकर से कहो कि एक बार प्रलय नृत्य कर दे, फिर से पूरे भारत में हर हर बम का जयघोष हो। स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई यह कविता देशवासियों से पुनर्जागरण की संदेश देती है।

"परशुराम की प्रतीक्षा" में कवि देशवासियों में राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं:

दासत्व जहाँ है, वहीं स्तब्ध जीवन है,
स्वातंत्र्य निरन्तर समर, सनातन रण है,

स्वातंत्र्य समस्या नहीं आज या कल की जागृति तीव्र वह घड़ी-घड़ी पल-पल की कवि आगे यह कहता है-

तिलक चढ़ा मत और हृदय में हूक दो,
दे सकते हो तो गोली बन्दूक दो।

युद्ध में पराजय से बड़ा कोई पाप नहीं इसलिए वे कहते हैं: एक वस्तु है ग्राहय युद्ध में, और सभी कुछ देय है,

पुण्य हो कि पाप, जीत केवल दोनों का धेय है।
X X X X X
समर हारने से बढ़कर घातक न दूसरा पाप है।

कवि जनता को अमरीकी और फ्रांसीसी क्रांति का उदाहरण देकर लोगों को क्रांति के लिए प्रेरित करता है तथा अंग्रेजी सरकार को भी सावधान करता है कि जनता की ताकत को अनदेखा मत करो

"मत खेलो यों बेखबरी में
जन-समुद्र यह नहीं, सिंधू है,
यह अमोध ज्वाला का
जिसमें पड़कर बड़े-बड़े कंगुरे पिघल चुके हैं।
लील चुका है यह समुद्र जाने कितने देशों में
राजाओं के मुकुट और सपने नेताओं के भी,
सावधान जन्मभूमि किसी की चारागाह नहीं है,
घास यहाँ की पहुँच पेट में काँटा बन जाती है।"

हिंदी कविता के माध्यम से कवियों ने राष्ट्रीयता, समाज सुधार, देश प्रेम, जन जागरण, विदेशी शक्तियों के प्रति तीव्र आक्रोश ,शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध जनाक्रोश की भावना को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। भारतेंदु और द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता, देश प्रेम के साथ-साथ हिंदू मुसलमान एकता को बनाए रखने की एकजुट होने की संदेश हिंदी के विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से दिया गया।

जब देश में स्वतंत्रता का संघर्ष चल रहा था विदेशी आक्रांता उसे ट्रस्ट भारत का जनमानस गुलामी की मानसिकता से मुक्त होना चाहता थे। मुक्ति की यह प्रबल आशा है उस काल के कवियों में प्रखर देशभक्ति और व्यापक राष्ट्र प्रेम के रूप में अभिव्यक्त हुई राष्ट्रप्रेम की भावना

जन-जन में फैलाना इस काल के कवियों का प्रमुख उद्देश्य और लक्ष्य रहा। भारतेंदु जी ने देश में हो रहे अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई -

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी
पै धन विदेश चालि जात इहै अति ख्वारी।

क्रांतिकारी आंदोलन के नेताओं और कार्यकर्ताओं में अपूर्व उत्साह और साहस था जहां वे हंसते-हंसते देश के लिए अपना प्राण प्राणों का बलिदान दे रहे थे वंही है कवी जनता मे देश प्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगार से सिद्ध हुए थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आहवान किया :

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पश निरा है और मृतक समान है।।

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित झांसी की रानी कविता आज भी सब को प्रेरित करती है। वीर सैनिकों में देश प्रेम के आगाध संचार कर जोश भरने वाली अद्भुत कृति की रचना की जो आज भी प्रासंगिक-

सिंहासन हिल उठे,
राजवंशों ने भ्रुकुटी तानी थी.
बूढ़े भारत में भी आयी.
फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की
कीमत सबने पहिचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की
सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी.
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी.
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान जी स्वयं स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में भाग लिए थे। उनके रग-रग में राष्ट्रप्रेम भरा हुआ था। इसलिए उनके काव्य में राष्ट्रप्रेम से भरपूर कविताओं को देख सकते हैं जैसे जालियांवाला बाग में बसंत राखी, विजयदशमी, लक्ष्मी बाई की समाधि पर और वीरों का कैसा हो बसंत आदि कविताओं में सुभद्रा जी का राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रवाद की झलक दिखाई देती है। राष्ट्रीय कविता की कतार में उनकी 'झांसी की रानी' अत्यंत लोकप्रिय रही है। उनकी खिलौनेवाला कविता में देशभक्ति की अद्भुत रचना हैं-

मैं तलवार खरीदूंगा मां
या मैं लूंगा तीर कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का को
मारूंगा राम समान।

आपने 'झांसी वाली रानी थी' कविता के माध्यम से भारत के लाखों युवक-युवतीयों को प्रेरित किया है। त्याग, समर्पण का मोल समझाया है। देश प्रेम, अपूर्व साहस के लिए आप की कविताएं आज भी प्रासंगिक है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय जब पूरे देश में विदेशी वस्त्र एवं वस्तुओं का विरोध विरोध हो रहा था नाथूराम शर्मा 'शंकर' जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से अंग्रेजों का ही विरोध नहीं किया बल्कि उनके वस्त्रों का भी विरोध करते हुए देशी वस्तुओं को अपनाने का अनुरोध कविता के माध्यम से किया -

"विदेशी वस्त्र क्यों हम ले रहे है?
वृथा धन देश का क्यों दे रहे हैं ?
न सूझे है अरे भारत भिखारी ।
गई है हाय तेरी बुद्धि मारी ।
स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार कीजै
विनय इतना हमारा मान लीजै
शपथ करके विदेशी वस्त्रा त्यागो,
न जावो पास उससे दूर भागो।"
(द्विवेदी काव्य माला, स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार, पृष्ठ संख्या 368- 37)

इनके अतिरिक्त रामदेवी प्रसाद पूर्ण, रामचरित उपाध्याय की कविताओं में भी विदेशी वस्त्रों का विरोध हुआ है और आप की कविताएं भी राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी , अयोध्या सिंह उपाध्याय जी के कविताओं में भी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा और उदार भावों का परिचय मिलता है। विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों और प्रमुख घटनाओं ने कवियों को अत्यंत प्रभावित किया जिसके वजह से कवियों ने मात्र का काव्य का सृजन ही नहीं किया बल्कि आंदोलनों में भाग लेने लगे। राष्ट्रीय आंदोलन, ब्रिटिश सरकार का दमन चक्र, क्रांति आदि से कवियों को अछूता रहना असंभव था। इसलिए भारतेंदु युगीन, द्विवेदी युगीन कवियों ने विराट राष्ट्रीय आंदोलन का वर्णन करके देशवासियों को दासता से मुक्त होने की प्रेरणा दी साथ ही धैर्य भी बढ़ाया। गांधीजी के सिद्धांत, विचार, लोकमान्य तिलक के स्वराज्य की कल्पना, स्वदेशी आंदोलन, आदि ने कवियों को बहुत आकर्षित किया। कवि मैथिली शरण गुप्त जी ने 'भारत भारती ' में स्वदेशी वस्तुओं की उपेक्षा से होने वाली आर्थिक हानि को कविता के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की। सन 1930 में नमक कानून तोड़ने के लिए गांधीजी इतिहास प्रसिद्ध दंडी यात्रा की। सोहन लाल चतुर्वेदी जी ने जनता को इस आंदोलन में भाग लेने के

लिए संदेश दिया-

"नवयुग का नव आरंभ हुआ
कुछ नये नमक के टुकडों पर
आज़ादी का इतिहास लिखा
दाण्डी के कंकड़ पथरों पर ।
(जय गांधी, सोहन लाल चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या 72)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने भी गुलामी के जंजीरों में बंधे जनता में जागृति लाने के लिए राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कई कविताओं की रचना की है। जिनमें, आदर्श त्याग, देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

उनकी 'जागो फिर एक बार' कविता इसके लिए अद्भुत उदाहरण है-

"जागो फिर एक बार ।
प्यार जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हे
अरुण-पंख तरुण किरण
खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार
आँखे अलियों सी.
किस मधु की गलियों में फंसी
बन्द कर पाँखें
पी रही हैं मधु मौन
अथवा सोयी कमल-कोरकों में ?
बंद हो रहा गुंजार
जागो फिर एक बार।

प्रसाद की प्रथम भारत, अब जागो जीवन के प्रभात, बीती विभावरी जाग री आदि कविताओं में भी राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है-

अब जागो जीवन के प्रभात।
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
ऊषा बटोरती अरूण गात।

'पेशोला की प्रतिध्वनि' और 'प्रलय की छाया' 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण में सिक्खों और अंग्रेजों के बीच 1849 में हुए युद्ध में सिक्खों की दु:खद पराजय के मार्मिकांकन के साथ-साथ सिक्खों की रणसंगिनी तलवार, उनके शौर्य एवं पराक्रम की भी झाँकी है। इस कविता में स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए शेरसिंह के सेनापतित्व में अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध का वर्णन है। इस कविता में मातृभूमि की रक्षा के लिए पुकार है, रणसंगिनी तलवार है, शत्रु सेना का हाहाकार है और देश पर मर मिटने की ललकार है-

सिक्खों के शौर्य भरे जीवन की संगिनी
कपिशा हुई थी लाल तेरा पानी पान कर
दुर्मद दुरन्त धर्म दस्युओं की त्रासिनी
निकल-चली जा तू प्रतारण के कर से

स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी के कवियों ने ऐतिहासिक , पौराणिक पात्रों के माध्यम से जनता में देश के प्रति श्रद्धा, शौर्य, पराक्रम ,साहस, धैर्य , स्वाभिमान को जगाने का प्रयत्न किया है। आप सभी की कविताओं में भारतीयों में देशभक्ति और राष्ट्रीयता की अलख जगाने की संदेश है। स्वदेश प्रेम, त्याग, बलिदान एवं कर्तव्य परायणता को जागृत करने वाली हिंदी कवियों की कविताएं आज भी प्रेरणादायक है ,प्रासंगिक है।

सन्दर्भ :

1. *हुंकार, रामधारी सिंह "दिनकर"*
2. *परशुराम की प्रतीक्षा, रामधारी सिंह "दिनकर"*
3. *भारत दुर्दशा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*
4. *द्विवेदी काव्य माला, स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार, पृष्ठ संख्या 368 -37*
5. *जय गाँधी, सोहनलाल चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या 72*